

क्षणप्रभा

शिव कुमार झा “टिल्लू”

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यम सँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।

ISBN : 978-93-8.538-32-7

मूल्य: भा. रु.200/-

पहिल संस्करण : 2013.

कॉपी राइट- © शिव कुमार झा “टिल्लू”

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८, दूरभाष-

(०११) २५८८९६५६-५८ फ़ैक्स- (०११)२५८८९६५७

Website: <http://www.shruti-publication.com>

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-11...2

अक्षर संयोजन- श्री उमेश मण्डल

Distributor : *Pallavi Distributors*, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.-

957245.4.5, 9931654742

Kshanaprabha: Anthology of Maithili Poems by Shiv Kumar Jha 'Tillu'

अपन छोटका कक्का
स्व. नवलकान्त झाक
चरण रजमे
सादर समरपित... ।

आमुख

“क्षणप्रभा”क अर्थ होइछ बिजरी जेकरा प्रबुद्ध जन तड़ित कहैत छथि। हम कोनो नैसर्गिक कवि नै, क्षणिक भावना कविताक रूपेँ अभिव्यक्त भेल जेकर प्रासंगिकताक निर्णय पाठकगणपर छन्हि।

हमर कहब मात्र ईएह जे हमर ई पहिलुक प्रयास छी एमे काव्य लक्षणा ओ व्यंजनाक अनुपालन भेल वा नै ऐ विषयमे हम किछु नै कहि सकै छी, मात्र ईएह कहबाक लेल नीति संगत हएत जे जइ भाषाकेँ बाल कालहिँसँ हियामे लगा कऽ रखलौं ओइ भाषामे अपन किछु अभिव्यक्ति पाठकगण लग परसि रहल छी।

हमर जनम मातृक मालीपुर मोड़तरमे भेल, हाशमीजी ओइ गामक बगलमे शिक्षक छला, मालीयेपुर गाममे रहै छला, हमर बाबूजी स्व. कालीकान्त झा ‘बूच’सँ साहित्य साधनाक क्रममे बड़ड अन्तरंगता भऽ गेल छेलनि, पारिवारिक सम्बन्ध जकाँ। हमर बाल्यकालक उपनाम “टिल्लू” हिनके राखल छियनि, जखनि हम नेना छेलौं (४-५ बर्षक) तँ ओ हमरा कहै छला- “टिल्लू मियाँ राही, पेटमे कराही, आ दौगऽ हौ सिपाही”। माए चन्द्र कला देवी सेहो मैथिलीमे किछु पद्य लिखने छेली। बालकाल मातृकमे बितल, तेकर पछाति पैतृक गाम उदयनाचार्यक भूमि करियनक माटि-पानिमे रमि आगाँ बढ़ैत गेलौं। पिताक कवित्वक कारणेँ महाकवि आरसी, चन्द्रभानु सिंह, प्रवासी, प्रो. नरेश कुमार विकल, प्रो. विद्यापति झा, प्रो. राम कृपाल चौधरी राकेशसँ परिचय भेल। तेकर परिणाम छी ई छोट-छीन कृति।

धैनवादक पात्र छथि श्रुति प्रकाशनक संग-संग श्री गजेन्द्र ठाकुर आ उमेश मण्डलजी जिनकर सानिध्यमे ई झुझुआन रचना संकलन मैथिलीक पटल सोझा आएल।

संग-संग डॉ. शेफालिका वर्मा, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल,
श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी सन प्रवीण साहित्यकार सेहो धैनवादक
पात्र छथि जनिक उत्साहवर्द्धनक कारण ई पोथी अपनेक हाथमे
विचार करबाक लेल उपस्थित अछि।

सादर

-शिव कुमार झा “टिल्लू”

ऋतुराजमे विरहिनी

पिया केना कऽ बिततै फागुन मास अपार औ,
जीवन भेल पहाड़ औ ना..... ।

कोइली कृहकै ठाढ़ि पात
होइत मनमे अघात
एकसरि डूमि रहल छी, अहीं बिनु हम मझधार औ
जीवन भेल पहाड़ औ ना..... ।

भ्रमरक गुंजन लागए तीत,
केहेन निष्ठुर भेलौं मीत
केना कऽ सूखि सकत ई फूटल अश्रुधार औ,
जीवन भेल पहाड़ औ ना..... ।

सखी सभ सदिखन अछि कवदाबए,
बिष्ठुरन रोदन लऽ कऽ आबए
बिहुँसल यौवन पसरल मेघ आ अभिसार औ,
जीवन भेल पहाड़ औ ना..... ।

देखिते अबीर गुलालक रंग
विरह बनौलक कलुष उमंग
कहू केना उठत ई मृत शय्याक कहार औ,
जीवन भेल पहाड़ औ ना..... ।

○○

कंतक आवाहन

आजु मुदित मन बालारूण केर-करू मंगल गुणगान अय ।
जड़ उपवनमे सुमन फुलौल यौवन महमह भान अय ।
श्रैंगारिक वेलामे सपनहिं
प्रियतम छूलनि कपोल हमर ।
अर्द्ध निन्नमे चिहुँकल जहिना,
सासु मरोड़लि लोल हमर ।
अभिनव औता आजु सुनल दुरभाषमे अपने कान अय ।
जड़..... ।

झट उठि देखल धर्म मातृ केर,
आनन परिमल पुष्प बनल ।
पूत दर्शनक आशमे डुमलि,
मंजुल मुसकी पनकि रहल,
चलू रम्भा भंडार चढ़ाबू हेता भुखल अहँक पराण अय ।
जड़..... ।

असमंजसमे दुहु भैरवी,
मातृक लोचन सुधा भरल ।
बामा हम तँ नेहक लुत्ती,
तनय अनल प्रेम धधकि रहल ।
जननी हृदए छोहसँ आकुल स्वार्थहि हमर जहाँन अय ।
जड़..... ।

चरण छूबि नाथक माता केर,
कएलौं चटपट स्नान हम ।
कुमकुम केसर जूही चमेली,
कूलदेवी गमगम अनुपम ।
देवकी नन्दन बंसी बजाबथु बोरि-बोरि द्राक्षा तान अय
जड़..... ।

संभवि अहाँ ननदि नै अनुजा,
बनि कम कएलौं ताप हमर ।
नै तँ फँसि विरहक संतापे,
पीब लेतौं कखनौं जहर ।
आनब उपहारेमे अहीं लेल विज्ञ, धान्यवर चान अय
जड़..... ।
○○

मिथिला-पुत्र

मिथिलाक बेटीकेँ सहए पड़लनि
झमेलिया बिआहक दंश
सतभैया पोखरिसँ पंचवटी धरि
किसुन तकलौं
केतौ ने भेटल
सभ राकश सभ कंश
नअ मास नै
पैसठि बरख धरि
मयना उठबैत रहली
प्रसव वेदनाक टीस
तखनि जा कऽ भेल
जीवन संघर्षक जीत
दिवसेमे तरेगन बहकल
विदेहक आँगन जनमल जगदीश
मौलाइल गाछक फूल गमकल
तापसमे भैंटक लावा चमकल
पूर्वाग्रहक चपेटिमे
जाति-पजातिक गँठमे
ओझरा कऽ मैथिली
भऽ गेल छलि निर्मूल
बेदम्म गजेनक आश जागल
सुखैत गुल्लरिमे फूल लागल
रमकल जिनगीक जीत
वैयक्तिक नै-
पसिझैत गामक जिनगी
मात्र मेंहथ आ बेरमा नै
मौरंगसँ सिमरिया धरि
चमकि उठल इंद्रधनुषी अकास
केकरो नै छल बिसवास

द्विजक मुरदैयाक संग-संग
अछोपक सोती बहत...?
स्वाभाविक छल उपहास हएब
मुदा! तिरस्कारक क्षोभ नै
जीवन-मरण तँ प्रकृतिस्थ लीला
तखनि केकरोसँ केहेन द्वेष?
अवतारवादक सेहो होइत पराभव
कियो पनही देत की नै
कोनो तृष्णा नै
नै उत्थानक आश
पतनसँ घृणा नै
अकाल भेल तँ बिसाँद चिबा कऽ
राति-दिन समरसता दीप
जड़बैत रहल
अपन गीतांजलि गाबि
कम्प्रोमाइज करैत रहल
कोनो कलुष कम्प्रोमाइज नै
गत्र-गत्रमे समन्वयवाद
कलमे टासँ नै
जीवन दर्शनमे सेहो
चलि गेला भोगेन्द्र
नै तँ उत्तर भेटि जइतए
यात्री, आरसी आ फजलुरसँ
सेहो कोनो तुलना नै
आन इचना-पोठीक कोन गप्प
लोक चानी नै टलहा कहए
विज्ञ नै बुडिबक बूझए
संस्कार नै छोड़ब
खाँटी किसान मजदूरक रूप
ब्रह्म बेलामे कलम खियाबथि

सरल धबल बेरमाक भूप
एहेन साम्यवादी-
फाँसीपर चढ़ि जाएब
मुदा बटोहीकेँ अधला
बाट नै देखाएब
केकरो नै सुनलक
संततिक कोन कथा
अद्धाँगिनी सेहो सहैत रहली
ऐ लेलिनक सेहो देल बेथा
ने केकरो तर करब
ने केकरोसँ ऊपर जाएब
सबहक शोणित एक्कहि रंग
केलक विरोध बेवस्था बेढंग
मरल गरीबक बाप मुदा की
पुरहित-पात्रकेँ भरिगर चाही
धूर-धूर बास बिका गेल
काहि काटि लूटबैत बाहबाही
लेस मात्र नै दया अग्रजकेँ
सिहरि-सिहरि अश्रु-उच्छवास
कहियो नै अगिला पएर पुजाबधि
केतए राम धर भूत पिशाच?
सभा बजौलनि धानुक टोलक
अपनहि जातिमे पंडित देखू
भाँज पुराएब जटिल कर्मकाण्डक
माइक समान नै धरती बेचू
मात्र बाटपर आनै खातिर
करै छथि प्रतिक्षण सामन्त विरोध
सम्यक समाज मिथिलेमे बनतै
जगा रहला समभाव बोध
अक्षोपसँ नै गंग छुआबधि
तखनि केना कऽ हाड़ छुआइत

मनः दीपसँ हीयमे तकबै
मिथिला पुत्रक स्पन्दन हएत..... ।

सधवा-विधवाक बीचक खाधि
भरबाक केलक प्रयास
भादवक अन्हारमे नै धारलकनि
उलबा चाउरक आश
बड़की बहिन राति-दिन
सुखाएल पोखरिक जाइठ पकड़ि
सरिताक बाट जोहैत छेली ।
केना स्वयंवर हएत
मकोबकी उद्विग्न छथि
मिथिला पुत्र रत्नाकर डकैतकेँ
भकमोड़सँ सुपथ दिस
आनए लेल बेकल
मुदा केकरो नै सुनत
अपने बजन्ता अपने बुझन्ता
पंचवटीपर ठाढ़
शंभुदासकेँ तकैत
राति-दिन समताक
गीतांजलि गाबैत
तीन जेठ एगारहम माघ बीतल
एक धाप जमीनक लेल वारंट निकसल
वेचारी मनसारा बेथे बेथाएल
बेरमा कानि रहल अछि
पितृदोखसँ विदीर्ण भऽ गेल तीनु पुत्र
कानि रहल छथि रामसखी
रघुवरक सहचरि सन नाओं ।

सीता सन उताप

बरदास करए पड़तनि
मिथिलाक ईश
मिथिलाक ईशकेँ जनम देलनि
सुरक प्रभु सेहो कोइखमे
उमेश तँ सद्यः छथि
मुदा! जखनि जगतक ईश
स्वै भवन्तु सुखीनःमे लगल रहत
परिवारमे अभावक भाव सोभाविक हएत
ई तँ हरिहर काका भऽ गेल छथि
ठीकेदार साहैब दऽ देलकनि टैगोर
अन्चोक्केमे... ।
की ऐसँ समाजक दायित्व पूर्ण भऽ गेल
नै कथमपि नै
जे मिसिर जीक सिनेहकेँ
हीयसँ लगा लेलक
अपनाकेँ साम्यवादसँ दूर भगा देलक
निरंतर सतबेधसँ
बाभन-सोलकनक खादिकेँ भरि रहल
ओकरा टैगोर बना कऽ नै छँटियौ
ओकर मिथिला दिस तकियौ
वएह शांति निकेतन
वएह ओकर विश्व भारती
तखने जनम लेत दोसर मिथिला पुत्र
मुदा! अखनि तँ असंभवे लगैत ।

○○

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीकेँ समर्पित...)

अतृप्त नैन

आकुल पड़ल विगलित नभ दिस तकैत,
छेलों रैनि केर निर्वाणक प्रतीक्षा करैत ।
केना काटब ऐ संतापी जामिनीकेँ,
ओ तँ छेली हमरे कटैत ।
झकझोड़ि देलक अन्तर्मनकेँ
नैनाक पूछल अंतिम प्रश्न-
अहूँ अहिना करब की?

पददलित केलक विष रहित फनकेँ ।
दुहू नैन नोरसँ सरावोरि,
देलनि हमर आत्माकेँ मड़ोरि ।
निःछल करुणामयी भऽ भाव विभोर
देखए लगलौं अवलाक धधकैत ज्वार
सुनैत गेलों सुनैत गेलों ।
निरूत्तर हमर बेथा क्षीण भऽ गेल-
मंचसँ नेपथ्य भरिगर लागल
की सोचैत छेलों? वास्तविकता..... ।

चाननक सेजपर पड़लि अर्धांगिनी
धान्य, रजत, कांचन, भरल..... ।

मुदा! सदिखन खसैत् वेदना केर दामिनी?
छल अपूर्ण यौवन अतृप्त नैन
हा! तात केना कएल वरन
एक गाही वयसक सुकन्या केर
कंतक वयस पचपन..... ।

गामक चुलबुली मोनालिसा

कुहरि रहलि कनक गृहमे-
असहाय तातक देल विपदाकेँ
भोगि रहलि जोगि रहलि ।
केना पार करती लछिमन रेखा-
अपन विहुसल हिलोरकेँ
केतए करती प्रस्फुटित
हमरासँ कएली अपन पीड़ा प्रकट
पाषाणी नर कऽ देलनि जीवन विकट
बूढ़ कंतक डोलि गेल आसन
शंकाक अजगर तोड़ि देलक प्रीति स्तंभ
कठोर आदेश देलनि अपन दाराकेँ-
आजुक पश्चात्पर पुरुषसँ गप्प
कथमपि नै करब
नै तऽ?
हम अचंभित सुन्न शिथिल
कलंकित चरित्र लऽ कऽ
धूरि गेलौं निःतरंग अपन पुरान पथपर
कोपि रहल दुहु पग..... ।

कोन अपराध कएलौं
हम तँ छेलौं पोछैत नोर ।
अतृप्त नैनसँ झहरैत नोर ।

○○

कुरुक्षेत्रमे राधा

नवनीत अहाँ पतवार बनू ऐ करूस सरोवर जीवनकेँ,
ठिटुरल कदम्ब जमुना ठहरल सखी हँसी उड़ौल अर्पणकेँ ।

आक्रांतित चहुँ दिस सुमन तरु,
विकल जड़ चेतन नभ धरती,
जल बुन्न बनल घन घनन घटा,
त्रासित राधा मन अछि परती ।
नवनीत..... ।

सत् असत कर्म बीचि घूमि रहल,
सभ जनितो अहाँ अनजान बनल,
भेटत की जन संहारेसँ,
अवला चित्कार आ नोर भरल ।
नवनीत..... ।

शापित करती ओ हिन्द सती,
जनिक नाथ लुप्त भू आंचलसँ,
संगहि करुणित वृन्दा-मथुरा,
लेब पाप सभक युद्ध माँचत जँ,
नवनीत..... ।

खोलू रण कर्मक डोरा डोरि,
डुमू पीयूष राधा-रसमे,
उत्ताप प्रेम तिल सुनगि रहल
नै आब ई यौवन अछि वशमे
नवनीत..... ।



मधु श्रावणी

मधुप विना सुन्न उपवन रे, मधुश्रावणी आएल ।
कंत विनय विवश केतए रे हीय 'आरती' हराएल ।

सुनू शिव छलिया स्वांगी बनि हमरा विरहएलौं,
संग महादेव नाम दियरकँ कलंकित कएलौं
मधुप..... ।

हम कएल केतेक अनुग्रह रे अहँ हमरा वचन देल,
मंजुल मिलन केतए गेल रे, केतए बात कलित गेल,
मधुप..... ।

हम अभागलि मैथिली रे, अपनै देल घात,
नुपूर खनकि दुःख कातर रे, तोड़ल दामिनी गात,
मधुप..... ।

विकल मन्हार सुनि शिव, आनन हँसीसँ उमड़ाएल,
जुनि हहरू सिये, अहँक लखन रघुवर संग आओल,
मधुप..... ।



बरहमासा

प्रियतम आकुल कुम्हरल दारा मन,
टिहुकि उठल ना ।

मूक शिशिर पुचकारथि केना?
दूर द्वीप सजना ।
जामिनी बनल कंत बिनु विजन,
तरूणी माघ मनौल क्रन्दन,
सरस वसन्त क ललित रात्रिमे-
हहरै कंगना ।
प्रियतम..... ।

दादुर ठहकए तृप्ति सरोवर,
अश्रुधारसँ सींचित कोबर,
कीर मृदुल सुनि चैतो बीतल,
विह्वल नैना ।
प्रियतम..... ।

अहँसँ सिनेहक धंधा कएलौं,
पौन आस बैशाख बुडएलौं
हृदैक मीन नीर बिनु व्याकुल -
सुन्न पलना ।
प्रियतम..... ।

जेठक रौदी काटि रहल छल,
सूखल कानन झाँटि रहल छल,
उदधि अकासे जलसँ तिरपित-
लवालव अँगना ।

प्रियतम..... ।

सौन-भादो मौन मनौल,
तुहिन गात तर आश्विन आएल,
कातिक-अगहन बिहुँसथि -
पूस मांगै छथि ललना ।
प्रियतम..... ।



कोप भवनमे कनियाँ

रूसलि किए सूतलि छी बनबू ने कनेक चाय अय ।
मिथिला हम चललौं, टाटानगरीसँ आइ अय ।

अहाँ जौं एना रहब तँ हम केना जीअब,
सदिखन कनिते-कनिते बेथे जहर पीअब ।
एना अहाँ रूसब तँ हम कऽ लेब दोसर सगाइ अय,
मिथिला..... ।

अहाँ केर रूप देखिते कामदेवो कानैत छथि,
“मृगनयनी“ केँ ओ उर्वशी मानैत छथि ।
बिहुँसल मादक घुघना लागै लौंगिया मिरचाइ अय,
मिथिला..... ।

छगनलाल ज्वेलरीसँ कनक हार लाएब,
आजु रैन पूनमकेँ, पार्कमे घुमाएब ।
हहरल मनक तृष्णा, नै बनू हरजाइ अय,
मिथिला..... ।

ऊटू प्रिये, अहाँ जल्दी नहाबू,
कोप भवनसँ उठि कऽ लगमे आबू ।
मंदहि मुस्की मारू, हम अनलौं अछि मलाइ अय,
मिथिला..... ।



प्रेयसीक विलाप

लागै बरखा इन्होर,
मारै बएसक जोर,
मिलनक आशामे बैसलि -
छी आबू ने चकोर ।
बाटे तँ तकिते तकिए,
नैन सूखि गेलै,
प्रेयसीक विलापपर नै-
अहँक धियान एलै ।
ठनका गर्जय मांचल शोर,
तिरपित नृत्य मोरनी मोर ।
मिलनक आशामे बैसलि,-
छी आबू ने चकोर ।
बेदर्दी जुनि बनू
मोन टूटि गेलै ।
पावसक शीतलता -
आतप्त भेलै ।
लुप्त भगजोगिनी दर्शय भोर,
लटकल मेघ गगन घनघोर,
किएक हृदए तोड़ि रहलौं ।
हाँ! हम्मर मन चित चोर ।
○○

लंका

खुरखुर भैया सूट सियौलनि,
बतही काकीक हाथ रूमाल ।

अध वयसि चोकटलही भौजी,
बाट पसारलि प्रेमाजाल
मैथिली कुहरथि पर्णकुटीमे,
सूर्पनखा बनली रानी ।

नेना पेट क्षीर बिनु आकुल,
मोबाइल नचाबथि पटरानी ।
अद्धागिनी नेत्रीसँ कुपित भऽ
शंखनाद केलनि मामा ।

हस्त ऊक लऽ मामी खेहलथिन्ह,
फूजल मामा केर पैजामा ।
अपन पुतोहुकेँ झाँकि अन लमे,
बनि गेली गामक सरपंच ।
धर्माचार्य देव मंदिर केर,
मुदा हृदए भरल परपंच ।

केतेक घरमे सान्हि काटि,
शांति समिति केर आब प्रधान ।
रक्षक छथि चुटकीमे बैसल,
केना बाँचत अवला केर मान?
विद्यालयकेँ मुँह नै देखल,
धएने कुरसी शिक्षा सचिव ।
कुटिल तंत्र केर ईह लीलामे
मारल गेलनि मूक गरीब ।

मुंडी इनारमे हुरहुर जन्मल,
कमीशन लागत दस परसेन्ट ।
नौकरशाह मोटरमे घूमथि,
आँखि गोगल्स काँखिमे सेन्ट ।

सभ काजमे दियौ भँट,
शौच करू वा लघुशंका ।
रामराज्यकेँ बिसरि जाऊ,
आर्यावर्त आब सद्यः लंका ।
राजनीतिमे अज्ञ-विज्ञ केर,
नै कोनो अछि वर्ग विभेद ।
अपने पीबथि ताड़ी दारू,
मंत्री विभाग मद्य निषेद्य ।

राग वसंतक गेल जमाना
सुनू ब्रितानी विकट संगीत ।
डंकल कुरथी पाक बनल
आ अप्पन वारिक पटुआ तीत ।



होरी

हाथ अबीर कॉरव पिचकारी,
भालपर गदरल चाह उमंग ।
पूरन भैया होरी खेलथि,
नव नौतारि सारि केर संग ।
कखनों डुमकी लैत अधरमे,
जुट्टीमे कखनों हिलकोर ।
नील, वैजनी लाल गुलालसँ,
रंगलनि चम्पा पोरे-पोर ।

'टिल्लू' नैनपर अचरज पसरल,
देखि भ्राता केर बसन्ती वुन्न ।
एखनों श्रृंगारक आह भरल मुदा -
आँखि अन्हार कान छन्हि सुन्न ।
हम पुछलयनि केना कऽ कएलौं,
मधुसँ उगडुम मधुर प्रबंध ।
सकल तन अछि बेकार मुदा हम,
ध्राण शक्तिसँ सूँघल गंध ।
भौजी लऽ बाढ़नि आ खापड़ि,
झाड़ि देलनि भैया केर अंग ।
कुरता फाटल नैन नोरायल
भूतल खसल होरी के रंग ।

○○

मॉडर्न जमाना

नुआ धोती मिल बरहर जनमल,
आएल बरमूडा मिनी स्कर्ट ।
मुन्ना भैया चुनरी ओढ़,
भौजी पहिरलनि जोलही सर्ट ।

काकी मरौत काढ़ने बैसलि,
काका गर धरम केर वाना ।
कदली कनियाँक हाँथमे वीयर,
आबि गेल मॉडर्न जमाना ।

भरि दिवसक गणना जौं करबै,
बहुआसिनक सात बेर सतमनि ।
भरल साँझ स्वामी आएल छथि,
अँइठार बैसलि लऽ मुँहमे दतमनि ।

अस्सी दशकमे मायसँ मम्मी
फेर माँम आब भेली मम्मा ।
मायक भ्राता केर नाम की राखब?
मामा पिघलि बनला झामा ।

अपन नेनासँ बेस पियरगर,
संकर झवड़ा चायनीज कुकुर ।
भुटका-नाथकेँ छाड़ि घरमे
टॉमी संग गेलि अंतःपुर ।

चरण स्पर्श निर्वाण लेलक आब,
छुट्टो कैचाकेँ भऽ गेल वाय ।
भौजी एकसरि मधुशालामे
भैयासँ गेलनि मोन अघाय ।

नेना पच्छिमक बोली उगलै ।
माँ मैथिली केना बजती दैया ।
बात अंगरेजिया माथ घुसल नै,
मुदा करै छथि याँ! याँ! याँ

तिलकोर मखान नीक नै लागए,
नै सुस्वादु मकैयक लावा ।
पॉपकॉर्न चाउमीन दलिया लेल,
मोँछ पिजौने बैसलनि बाबा ।

○○

ऋतुराज

सोहर गाबधि कोइली बहिना,
कीर मधुर ध्वनि बजबधि साज ।
जननी वीणा वादिनी हर्षित,
अवतार लेलनि सद्यः ऋतुराज ।
गर्वित उपवन मधुपक गुंजन,
वर्णक पुष्पक दिव्य सोहनगर ।
सरिता लवलव शांत उदधि छथि,
महु रसालमे उमड़ल मज्जर ।
माघक सातम धवल इजोरिया,
भेल नवल ऋतु नृप छठिहार ।
चिनुआर भरल पायस पूआसँ,
कुलदेवी साजल उपहार ।
भगजोगिनी केर पंचम सुर सुनि,
आँगन महमह मुग्ध दलान ।
दशो दिस मलमल गेना फूलल,
सरिसब बूट भरल खरिहान ।
रवि संग सुषमा अछिंजल उष्मा,
पात-पातपर पछबा वसात ।
विरहिनी बैसलि कंत आशमे
वयः तापसँ उपटल गात ।
मातु उमा मन मुदित विभूषित,
सजल नुपूर चरण चमकल ।
शिवरात्रिक अवाहन भेलै,
नाथ कुशेश्वर छथि गमकल ।
संवत जड़ल आ होली आएल,
अबीर गुलाबी हरिअर लाल ।
क्षितिज धरित्री एक बनल छथि,
ढोलक डुग्गी झाँझक ताल ।
छोट पैघ केर भेद मिटाएल,

वृद्ध जुआन संगमे बाल ।
छोटकी कनियाँ ठोर रंगलि आ -
बरक भरल पानसँ गाल ।
भैया भांग सुधामे सानल,
शिथिल पडल छथि माँझ ओसार ।
रंगलौं हम भौजीक चरणकें,
विदा बसन्त ऐ लोकसँ पार ।



नवतुरिया होरी

बाढ़िक पसाहीमे डुमल सगरो मिथिला धाम ।
बागमती करेहक आंतमे, ओझराएल हम्मर गाम ।
भदैया संग रब्बी बुडल, जिरातमे फाटलि गंग ।
बीति गेल फागुन मुदा, ऊँच जोताँस जलमग्न ।
नेना टोली हेरि रहल, सम्मत लेल खर पतवार ।
रामू बाबा सूतल खाट पर, ऊडल खोपरिक चार ।
पौत्रक नीन जहिना फूजल, झमाडल कुंभकरण ।
झट सनि ऊटू औ बाबा देखू नभ तरेगन ।
राम लोचन दौडलनि गाड़ि पढ़ैत बड़ी पोखरिक मोहारि ।
बनि कपीश नेना भुटका देलक खोपड़ी जाड़ि ।
लालिमा देखि आदित्यकेँ कदबा कएल दलान ।
शंभू रंगलनि गोबर थालसँ छोटका पाहुनक कान ।
तीन फुटिया लाला पैघ खोंचाह, हाकिमपर फेकल रंग ।
फूदन चिनुआरक घैलमे, मिलौल चित्री भंग ।
भरि कठौत पायस भरल, घिवही पूआ केर संग ।
भौजी तन बोरल गुलालसँ, उमड़ल मातृ उमंग ।
चैतावर टिटही तानमे, गाबथि टलहा दल ।
छोट छीन गुंजन-सुमन्त, घूमथि भूत बनल ।
सा रा रा रा गूंजि रहल लूटकुन जीक बथान ।
सियाराम जय गानसँ गमगम मैथिल दलान ।
डाक्टर भैयाक सारपर द्वारल कारी मोबिल ।
देखि नेना गण केर होरी गहुमनो घुसि गेल विल ।



चैतावर

आएल चैत मधुर रंग पाँचम,
उपवन बुलबुल गावय ना ।
सन-सन पुरबा मलय वसात,
झन-झन देह झनकाबए ना..... ।
कुहकै कुक कोइली बबुर वन,
चहकै अलि पाटलि मधुवन,
फडकै मोर मोरनि लोचन,
फनकै मृगी पद फन-फन,
भन-भन मन भनकावय ना ।
सन-सन..... ।
भाविनी खिलायलि गहवर,
वहिना मुदित हीय फरफर,
सखी नेह मातलि कोहवर
भौजी रेह गाबथि सोहर,
क्षण-क्षण तन छनकावय ना ।
सन-सन..... ।
प्रियतम बेथित ई आखर,
नोरक सियाही झरझर,
कोमल शय्या भेल खरखर,
सुखि देह वक सन पातर
कण-कण पट सिहरावय ना ।
सन-सन..... ।
उपटल फागुन केर रस बून,
हहरल नुपूर स्वर झुन-झुन,
विकल नैन भेल अधर सुन्न
अछि कोन कांतामे अवगुन?
घन-घन घट सनकावय ना ।
सन-सन..... ।

वृत एकान्त

लूटकुन जी केर चकचक भाल,
कपोल सिनुरिया बनल रसाल ।
टीशन चलला लऽ घटही कार,
आबि रहल थिन्ह सासु आ सार ।
छहछह तन मन भरल उमंग,
गृह घुरलनि विधि माताक संग ।
झटपट शांभवि चाह बनाबू,
पहिने रूहे आफजा लाबू ।
मम्मी छथि बड़ जोड़ पियासलि
भूखे समस्तीपूरसँ मैसूर आयलि ।
जलखै सेबै दलिपूड़ी क बोर,
मझिनी भुजल परोर आ इचना झोर ।
जुनि करू अकरहरि श्रवण जमाय,
अहँक सासु तँ हमरो माय ।
माय हमर आडम्वरि धर्मी,
सनातन पालिका संग षट्कर्मी ।
मतिसुन्न लक्ष्मीनाथ बजार गेलनि,
फुलल परोर माँछ इचना लेलनि ।
देखिते भरल माँछक झोरा,
फुजलनि सासु वन्न मुँह बोरा ।
पाहुन देलखिन घर घिनाय,
केना करब हम नहए खए?
काल्हि हमर छी वृत एकान्त
मछैन गृह केर सगरो प्रान्त ।
फेकू माँछ सटल तरकारी,
गांगाजलसँ धोयब आँगनवाड़ी ।
गैस चढ़ल अन्न नै खायब,

बौआसँ अंगूर सेव मंगाएब ।
काल्हक लेल चाही आमक चेरा,
माटिक चूल्हि आ बाँस चंगेरा ।
सिंगापूरी नै चिनियाँ केरा,
शुद्ध सुधा गुड सानल पेरा ।
शांभवि ई मैसूर नै गाम,
केतए हम ताकू जारनि आम?
विकट भेल रवि व्रत एकान्त,
ऐ चक्कर हमर जीवन अशान्त ।
लूटकून माथमे शोणित अटकल,
भाय वहिन मुँह मुस्की फटकल ।
हम की करब सभ दोष अहाँकेँ,
पावनि मास किएक बजौलौं माँ के?
ताकए चललनि कर्नाटक केर गाम,
हाँथ चूल्हि माँथ गठरी आम ।
सोझहे आबि खाटपर खसलनि ।
शांभवि जोर ठहक्का हँसलनि ।
सुनू प्रिये तारू सूखल अछि,
जल बिनु हमर हीय विकल अछि ।
एहेन बेथा नै हँसि उड़ाबू,
त्रास कंठगत नीर पियाबू ।

○○

अनाचार

बिहुँसल विजुकल दुष्यन्तक मन तनए गड़ल अछि थालमे ।
न्याय-धर्म भू हिन्द घेराएल अनाचार केर जालमे ।
परदारा आ परक द्रव्य दिस,
अधम कुलोचन हुलकि रहल ।
राजकोष केर बात की कहू?
श्वेत वस्त्र बीचि फुदकि रहल ।
जनतंत्रक आंचर वसुधापर मुस्की कौरव भालमे ।
न्याय ।
उदयन दर्शन आब अलौकिक,
भेल विदेहक कथा विलुप्त,
सभजन लागल भौतिकतामे
बुद्ध अयाची पुंज शुशुप्त,
खर खबाससँ मालिक धरि नाचय केँचा केर तालमे ।
न्याय ।
काटर लऽ कऽ गृहस्थ धर्मकेँ,
पालन कऽ रहलनि मनुसंतान ।
जानकी माता पातरि सजाबधि,
मधुशाला पैसलनि हनुमान ।
गर्भक कन्या भ्रूण हत्यासँ समायलि कालक गालमे ।
न्याय ।
जाति, पंथ, भाषा विभेद ई,
प्रजातंत्रकेँ साडि रहल ।
कुटिल राजर्षिक चक्रव्यूह,
अपने अपनाकेँ जाडि रहल
देवभूमिकेँ दियौ मुक्ति फाँसि गेल दलालक चालमे ।
न्याय ।

○○

अभिनव मिथिला धाम

“माँ मिथिले अभिनव मिथिला धाम ।
अहँक कोरकें छोड़ि आब हम,
नै जाएब दोसर ठाम ।
माँ मिथिले..... ।

वौरएलौं सगरो आर्य भुवनमे,
केतौ ने भेटल चैन ।
अकबक विकल दिवस दुःख भोगलौं,
तमस कटै छल रैन ।
माँ मिथिले..... ।

नवटोल नववोल देखलौं नवल चालि,
भाउज भावहुक नै भान ।
तात पूत एक्के संग बैसल,
करथि सुरारस पान ।
माँ मिथिले..... ।

मैथिल दीन जनेर फँकै छथि,
मुदा देव पितरक मान ।
छोट पैघ बीच लक्ष्मिन रेखा,
नै केकरो अपमान ।
माँ मिथिले ।

उदयनसँ दर्शन सीखि बाँटब,
अयाचीसँ, आत्म सम्मान ।
भारती मंडनसँ ब्रह्म ज्ञान लेब,
आरसी यात्रीसँ स्वाभिमान ।
माँ मिथिले ।

उर्मि धिआक त्याग देखिक,
कण-कण भाव विभोर,
वैदेहीक सती धर्मसँ उमड़ल,
कमलामे हिलकोर ।
माँ मिथिले ।

गोविन्द मधुपक सुनब पराती,
खोलि क दुनू कान ।
शिव शक्तिकँ श्रद्धासँ पूजव,
सुनबैत विद्यापति गान ।
माँ मिथिले..... ।

खोरा चाउर संग भाटा अदौरी,
वथुआ तिलकोर मखान ।
आचमनि श्वेत वलानक जलसँ,
गलोठि पतैलीक पान ।
माँ मिथिले..... ।

आन धामसँ रास सोहनगर,
कुलदेवी क गहवर ।
पच्छिमक त्वरित गीतसँ रूचिगर
अपन वैन सोहर ।
माँ मिथिले..... ।



हे तात

विलखि रहल छी अन्हर जालमे,
छोड़ि कत चलि गेलौं तात ।
कौपि रहल छथि सूर्यमुखी आ,
कृहरथि वृद्ध कनैलक पात ।
टोलक सभटा नेना भुटका,
आश लगौने घूमथि वथान ।
के देत उदयन धामक पेड़ा,
के देत मिठगर मगही पान ।
पंडित बाबा खाट पकड़लनि,
ककरा मुखसँ सुनता गान ।
श्यामजी अश्रु इनारमे पैसलनि,
आब के कहतनि पैघ अकान ।
आर्या माँक दुआरि सुन्न अछि,
सत्संगी सभ ओलतीमे ठाढ़ ।
भक्ति सागरक धार विलोकित,
लुप्त गगनमे अहँक कहार ।
अनसोहाँत ई दैवक लीला,
केना बनौलनि मर्त्य भुवन?
विज्ञानक आँगनसँ बाहर,
जन्म मरण जीवन दर्शन ।
करती केना श्रृंगार मेनका,
करतनि के रूपक वर्णन ।
देवराज छथि कोप भवनमे
जल बिनु करब केना तर्पण?
मुख मलीन कहियो नै देखलौं,
सुख दुखसँ अहाँ विलग विदेह ।
अंतिम भीख मँगै छी बाबू,
दर्शन दियौ एक बेर सदेह ।



आत्म उद्बोधन

अहाँ अपने पडल छी घोंटि धथुर कैलाश औ,
टुटल हम्मर आश औ ना ।

धरापर अएलौं प्रदोषक दिन,
मातु-पितु अहँक भक्तिमे लीन,
बूझल सभ जन वम वम लेलनि हमर घर वासऔ ।
टुटल ।

नेन कालहिँसँ छी हर भक्त,
सुखाएल करम-धरममे रक्त,
शारदालीन संगमे शंकरपर विश्वास औ ।
टुटल ।

देखिते वितल सुधामयी बर्ख,
जीवनसँ दूर भागि गेल हर्ख,
जननी उठलि भूमिसँ छोड़ि मोहक पाश औ ।
टुटल ।

चहुँ दिस कालक भेल प्रहार,
करम गति फँसल बीच मँझधार,
उदधि मरुस्थलि भेली हीयमे पसरल त्रास औ ।
टुटल ।

‘आशु’ अछि मात्र अहींसँ मोह,
होईछ अपन भागपर छोह,
हरु दुःख वा करु हम्मर निरस जीवनक नाश औ ।
टुटल ।

○○

केना कऽ अंतिम नमन करब
(कन्या भ्रूण हत्यापर एक छोट रचना)

केना कऽ अंतिम नमन करब,
आँचरकँ अहाँ कलंकित कएलौं
पुत्र जन्म सेहंतित सपनामे
करूणाधारिणी निर्दयी भेलौं ।
नै देखलौं आदित्य नै शशिक शिखा,
नै नभ देखलौं नै देखलौं वसुधा
नै भेटल छेह नै मृदुल क्षेम,
नै मोती माणिक्य रजत हेम,
पाँच मास अहँक गर्भमे रहलौं
जनपरिजनक तिरस्कार सहलौं
अपैत बूझि कएलौं अहाँ गर्भपात
भेल अपूर्ण नेनापर वज्रपात
अछि कोन ओ शक्ति मनुसुतमे
जे बेटीमे नै दर्शित भेल
मणिकर्णिका क शंखनाद सुनिते
वृद्ध कुंवरक यौवन झट धुरि गेल
दुःख एक्के बातक तातप्रिया
सृष्टि देलनि संततिकँ गरल पिआ
पावन आर्यभूमिक सुनयना
वैदेहीकँ देली माटि मिला
भवबंधनक ई केहेन दर्शन
नीर क्षीर बिनु बितल जीवन
तजि गेल प्राण तँ अनल अर्पण
अमिय मधुसँ पुत्र कएलनि तर्पण
एक बेर हमरो जौं कहितौं अहाँ
जीवनमे सुधा वोरि देतौं माँ
देतौं सतरंगी परिधान
पुत्रसँ वढ़ि कऽ करितौं सम्मान

दिअ आशीष हमार जननी
फेरि वेटी बनि नै आवी अवनी
नै सूखए पुनि नव किसलय दल
नै जलसँ पहिने भेटए अनल ।



पावस

लगिते आतप अनल ज्वालसँ,
पसरल सगरो हाँहाँकार
तरुण-वरुणक अग्निवेशसँ
जीव-अजीवमे अशांतिक ज्वार
मोन विरंजित हृदए सशंकित
वनल सरोवर कलुष मसान
सूखल किसलयक कोमल कांति
धधकि रहल नव लता वितान
नष्ट करब ऐ प्रलय भयंकर
प्रकट भेलनि अपने देवेश
घन घन घटाक संग आगमन
शीतल पावस बूनक बेस
नव रंग नव धुन नव मुस्कान
घुरल सृष्टिमे नवल जान
पुष्प खियालि कांचन उपवन
फूरल भ्रमरकेँ मधुर गान
मांतलि सरोवर कलकल सरिता
नूतन नीरक खहखह धारा
आएल कृषकमे दिव्य चेतना
भागल वेदनाक पुरा अँधियारा
पंकज प्रस्फुटित भेल सरोवर
वकः काक चित शांत सोहनगर
भरल घटामे मोर मजूरक
नाच मधुर बड़ लागए रूचिगर
गोधूलिक पवन वेगमे
चहकि उठल भगजोगिनी
वयः तापमे उमड़ि गेलि
मिलनक वियोगमे तरुणी
उन्मत्त घटा संग मधुर प्रेममे

नर-नारी भऽ गेल विभोर
दुई मासक ई रूचिगर पावस
उमड़ौल नव सृष्टिक जोर
○○

गीत

पिया निर्मोही खनकि गेल कंगना,
विपुल मृगी नैना,
किएक अहाँ बनलौं औ -
प्रवासी सजना ।

आगि भेल शीतल उधिया रहल पानि,
सुवासित जीवनमे उफनि गेल ग्लानि,
सुन्न प्रेयसीक सिनेह हृदए अँगना,
विपुल मृगी नैना ।

उमड़ि रहल विरह प्रखर आतप समान,
मुरुझाएल शुष्क अधर मरुघटमे प्राण,
धँसल बान्ह मर्यादाक सजना,
विपुल मृगी नैना ।

क्षणहिमे जीवन अभिशापित वनल,
सूखि गेल नेह पुष्प नोरसँ भरल,
आब कहि ने सकव हम सजना
विपुल मृगी नैना..... ।

○○

काका औ (बाल कविता)

सिबू मरसएब बड़ मरखाह छथि
छक्का छोड़ौलनि काका औ
दाँत कीचि दुनू भौँ सिकुड़ाबथि
हाँथमे नरकटिक सटक्का औ...
भूगोलक पहरि संस्कृत वचै छथि
क्षण-क्षण नोंइस लऽ हाँफी छिकै छथि
पंचतंत्रपर करथि टिटम्भा
विष्णुशर्मासँ नमछर खम्भा
बरहर गाछ तर गदहा बना कऽ
पाँछासँ मारथि धक्का औ...
जखनि कोनो छन्दक अर्थ पुछै छी
कहै छथि कुकुरपर लेख लिखें रौ
कहू तँ केना हम एक्के पहरिमे
रंग-बिरंगक बयना सीखू
हाँथ मचोरि पीआठपर देलनि
बज्जर सन दू मुक्का औ...
मुरुखे रहब आ महिस चराएब
कहियो नै ओइ इसकुल जाएब
एहेन राकससँ जान छोड़ाउ
भरि जिनगी अहँक गुण गाएब
बजै छी किछु जौँ नजरि झुका कऽ
खिसियाबथि कहि भूतक्का औ... ।

○○

हिंसक नानी

खापड़ि बेलना केर कहानी,
आब नै दोहराबू अय नानी ।

नाना बनल छथि सियार,
भक् छथि जेना हुलुक बिलार,
दंतक गणना घटि कऽ बीस
हुरथि गूड-चूडाकेँ पीस
गाबथि दारा दरद जमानी ।
आब..... ।

वरन् केर बर्ख भेल चालीस,
अर्पित अहँक चरणमे शीश,
अहाँ लेल लबलब दूध गिलास,
नोर पीबि अपन बुझाबथि त्रास,
क्षमा करू! छोड़ू आब गुमानी ।
आब..... ।

अवकाश क बीति गेल दस साल,
पेंशनसँ आनथि सेब रसाल,
भरि दिन पान अहाँ केर गाल
ऊपरसँ मचा रहल छी ताल,
चमेलीसँ भीजल अछि चानी
आब..... ।

केतेक दिन सुनता पितृ उगाही,
संतति पूरि गेलनि दू गाही,
मामा मामी क बिहुँसल ठोर,
माँ छथि, चुप्प! साधने नोर,

केना बनि जेता आत्म बलिदानी
आब..... ।



चश्माक बोखार

सोलहममे कएल अंतःस्थ प्रवेश,
हुलसल मन गेलौं नवल देश ।
हीय बसथि कला धएलौं विज्ञान,
राखल जननी इच्छाक मान ।
वैद्य अंगरेजियाँ बनि बचाबू दीनक पराण,
अर्थहीन मिथिलामे बढ़त शान ।
धऽ धियान सुनल सृष्टिक इच्छा,
गाँठि बान्हि लेलौं लऽ गुरुदीक्षा ।
कॉलेजमे बीतल पहिल सत्र,
आओल तातक आदेश पत्र ।
पढ़िते आबू अहाँ अपन गाम,
हैत ज्येष्ठक बिआह विद्यापति धाम
तन झमकि गेल, मन गेल गुदकि
भौजीकेँ देखबनि हम हुलकि ।
आगत रवि पहुँचल जनम ग्राम,
शत अभ्यागत छथि ताम-झाम ।
चहुँ-दिस भऽ रहल चहल पहल,
चिन्ह-अनचिन्ह सखासँ भरल महल ।
एक नव नौतारि बहुआयामी,
पूछलसँ छथि छोटकी मामी ।
प्रथमहि हुनकासँ भेंट भेल,
भेल दुनू गोटेमे क्षणहिँ मेल ।
साँझे औती दीदी अनिता,
आकुल माँ केर एक मात्र वनिता ।
देखिते देखैत आबि गेल साँझ,
माँ तकिते बाट ओसार माँझ ।
दीदी आँगन आएल हँसिते हँसैत
माँ गर लगौलनि ठोहि कनैत ।
हिनक नैन हेराएल रिमलेसमे,

देखि मामी पड़लनि पेशोपेसमे ।
 चश्मामे सुन्नर दाईक विभा,
 बढि रहल हिनक नैनक शोभा ।
 मामी! ई सऽख नै आँखिक इलाज,
 माँथ दरदसँ छल बाधित सभ काज ।
 सुनि मामी मोन भऽ गेल अलसित,
 हुनक बाम आँखिमे पीड़ा अतुलित ।
 नोचिते नोचैत भेल नैन लाल,
 दर्द पसरि रहल सम्पूर्ण भाल ।
 आँगन दलान पीड़ा किल्लोल,
 आँखि धोलनि लऽ जल डोले डोल ।
 फूलि गेल नैन केर अधर पल,
 हम सेकलौं लऽ गुलाब जल ।
 वैद्यो आएल नै कोनो असरि,
 कछमछ कऽ रहली-रहली कुहरि ।
 माते केलनि बाबूजीक ध्यानाकर्षण,
 आँगनमे आबि ओ दऽ रहला भाषण ।
 सभ दोष सारक नै दैत धियान,
 वयस तीस मुदा एखनौं अज्ञान ।
 रक्त जमल विलोचन झिल्लीमे,
 सैनिक कंत पड़ल छथि दिल्लीमे ।
 सरहोजिसँ पुछलनि पीड़ाक काल,
 पहिल बेरि भेल छल परूका साल ।
 माँ सऽ कहलनि लाउ नव अंगा,
 हिनका लऽ जायब दड़िभंगा ।
 तिरस्कार करब नै हएत उचित,
 कनियाँ दरदसँ अति बिहूँसित ।
 काह्नि अछि बिआह अहाँ जुनि जाऊ,
 करैत छी उपाय नै घबराऊ
 भोरे 'टिल्लू' जेता हिनक संग,

नै बिआहमे कऽ सकलनि हुडदंग ।
 भातृक सासुर जेता चतुर्थीमे,
 मातृ आदेश लागल हम अर्थीमे ।
 नै बात काटल शांत छेलौं सुनैत,
 राति बितल सुजनीमे कनिते कनैत ।
 कोन बदला लेलक बापक सार,
 अपन संकट बान्हल हमरा कपार ।
 मामीकेँ हम नै चीन्हि सकल,
 भीतरसँ इन्होर ऊपर शीतल ।
 नै जा सकलौं हम वरियाती,
 गाबै छी हुनक दुःखक पाँती,
 भोरे उठि दड़िभंगा जा रहलौं,
 नैनक शोणितसँ नहाँ रहलौं ।
 पहुँचल डाक्टर मिसिर केर क्लिनिक,
 चक्षुक चिकित्सक सभसँ नीक
 दुआरेपर कम्पाउन्डर नाम पुछल,
 मामी जुपूर कहलनि ओ कुकुर लिखल ।
 देखएमे भलपर वज्र बहीर,
 उपरि मन हँसल, भीतर अधीर ।
 वैद्य मिसिर कहल नै दृष्टि दोष
 दुहू आँखिए देखै छथि कोसे-कोस ।
 नेत्रक आगाँ नै अछि अन्हार
 हिनका लागल चश्माक बोखार ।
 हम लिखि दैत छी शून्य ग्लास,
 बुझा दियनु हिनक रिमलेशक प्यास ।
 ताहूसँ जौं नै हेती नीक,
 आँखि सेकू बनि सिनेही बनि कऽ,
 अधरपर मुस्की आगाँ अन्हार,
 कानल मन सोचि बिआहक मल्हार ।
 डाक्टर बनऽ केर तृष्णा मनसँ भागल,
 एहेन मरीज भेटत तँ हएब पागल ।

धुरि गाम माता केर करब नमन,
तोडू जननी हमरासँ लेल वचन ।
चशमिश नैन मामी छथि अति गदरल,
हमर योजना हिनक भभटपनमे उड़ल ।
○○

आकुल जननी

(बाल कविता)

सूति रहू हमर लाल, अर्द्ध रैनि बीतल ।
अहँक अविरल नैनसँ आँचर तीतल ।

घोंटि अछिंजल काटि रहलौं अछि जीवन,
तात दर्शनक आश छिन्न किएल अरपन,
क्षीर बिनु दुहू वक्ष शुष्क पड़ल ।
सूति रहू ।

कोन सियाहीसँ लिखल विधना हमर कपार?
अपने प्रवास गेलनि छोड़ि हमरा बेथा धार,
चानन सन नेनाक हीय, भूखसँ कानल ।
सूति रहू ।

हुनके की दोष दिअ स्नेहक ओ दिव्यमूर्ति,
कायादीन विद्या विहिन करथि पंचजनक पूर्ति,
अहँक अश्रु मातृ नैन शोणित भरल ।
सूति रहू ।

कहबनि गौमाता आनू औता फागुनमे
कामधेनुक सुधा भरब अहँक कण-कणमे
अहाँ निन्न हम कल्पनामे उड़ल ।
सूति रहू ।

○○

अंतिम छंद
(बाल कविता)

सात बरख केर जखनि वएस छल,
बिहुँसल मन उजडल मकरन्द ।
एखनों क्षण-क्षण हीयसँ उफनए,
माय जे बाजलि अंतिम छंद ।
सुनू पूत हम छाडि अबनिकँ,
जा रहलौं विधना केर घर ।
अपन तातकँ कोँचा पकड़ू,
मानि जननि शीतल आँचर ।
हमर चरण धऽ लिअ अहाँ प्रण,
तानए धरम केर राखब मान ।
कर्म डगरिपर हमर छाँह संग,
बढ़ब करैत पितृक सम्मान ।
हंसवाहिनी चरणमे अरपित,
अपन शीश दऽ सोखब ज्ञान ।
नीच बाटपर डेग नै राखब,
जीवनमे करब नै सुरापान ।
केहन दृष्ट अदृश्य वियाधि ई,
सभ किछु बुडल अहाँ भेलौं दीन ।
हीय नै हारू ऐ अखिल भुवनमे,
छथि केतेक लाल साधन विहिन ।
अम्बुज अहाँकँ हमर सम्पत छी-
विलोचनसँ जुनि बहबू नोर ।
शिखर लक्ष्यकँ निश्चित साधव,
दैत मातृ स्मृतिक वोर ।
हुनक दिव्य आशीष प्रतापसँ,
भेल धन, मन, जश पूरित जीवन ।

मुदा 'माय' गुंजन जाँ सुनि हम,
रोम-रोमसँ उपटय क्रन्दन।



हुरहुर

(बाल कविता)

दलानक पाँजरि गमकि रहल छल,
गदरल गाछ फुलल फुलवाडी ।
कात सटल कट्टा भरि लागल,
खसखस साग हरिअर तरकारी ।
बाबा कमाबथि सीता गुनि-गुनि,
हमर हाथमे जलक गगरी ।
हुनक नैनसँ ओझल भऽ कऽ,
खूब चिबाबी गाजर ककरी ।
लदल गाछ छल नेबो बरहर,
अनार शरीफा मधुर लताम ।
बिनु आज्ञा केयो पात जाँ छूबए,
बाबा छीलथि ओछर चाम ।
दीर्घ पिपासित किछु गाछ कँपै छल,
ढारि देलौं भरि गगरी नीर ।
झन्न पीठपर लागल चटकन,
उमडल बेथा गेल देह सिहरि ।
खसि पड़लौं कात परतीमे,
तमकैत बाबा लगलनि दुत्कारए ।
अछि उदण्ड दीर्घटेंटी नेना,
हम्मर कोनो बात ने मानए ।
पुष्पहीन अफलित गाछपर,
देलक सभटा जल उडेल ।
नीक अधला गप्प बूझए नै,
तेसर कक्षामे चलि गेल ।
भनसार आबि मायसँ पूछल,
लोचन डबडब नासिका सुरसुर ।

आडि मुरझाएल छी कोन झाड़ी,
बाउ ओइ अनाथक नाम हुरहुर ।
माल जालसँ फुलवाड़ी बँचबैले,
आडिपर मालिक ओकरा रोपय ।
सामन्ती जिरातक उपेक्षित सेवक,
खाद-पानि लेल केकरो नै टोकए ।
लोलुप जहाँनक अपवर्जी छी
सओन जनमल बैशाखे उपटल ।
तीत पातमे पुष्प खिलय नै,
उपहासेमे जीवन विपटल ।
रैन इजोरिया गगरी भरि-भरि,
जलसँ देलौं हुरहुरकें बोरि ।
भोरे-भोरे बाबाकें देखल,
सजाबैत कियारी पासनिसेँ कोरि ।
कर्कष हीयमे प्रीति देखि कऽ,
झट दौड़ि हुनका गर लगौल ।
दलित उपेक्षित जीवन बाँचल,
श्रद्धासँ नोर टपकौल ।

○○

अंजलि
(बाल कविता)

काका : सूति रहु अय बुच्ची ओल,
पाकल परोर सन लागए लोल ।
उल्लू मुख भदैया खिखिरक वोल,
नाम 'अंजलि' केतेक अनमोल ।

अंजलि : माँ टिल्लू काका बड़का शैतान,
थापर मारि ठोकै छथि कान ।
अहाँसँ नुका कऽ चिवबथि पान,
फोड़बनि माथ वा तोड़बनि टाँग ।

काका : भौजी! छोटकी फूसि बजै छथि,
रीतू संग भरि दिन विन-विन करै छथि ।
दावि रहल छी हिनक देह हम,
उत्छृंखल नेना करै छथि तम-तम ।

अंजलि : काका जुनि घोरु मिथ्याक भंग,
आब नै सूतब हम अहाँक संग ।
माँ लग हमरासँ सिनेह देखबैत छी,
एकात पावि हमर घेंटी दबैत छी ।

काका : पठा देब काल्हि अहाँकँ हाँस्टल,
नेनपन ओइठाँ भऽ जएत शीतल ।
ओतए भेटत नै खीरक थारी,
नै रसमलाइ नै पनीरक तरकारी ।

अंजलि : काकू बनव हम बुधियारि नेना,
सदिखन बाजब सुमधुर वयना ।

केकरो संग नै मुँह लगाएब,
अहीं लग रहब हाँस्टल नै जाएब ।



अहँक आँचर
(बाल कविता)

आब विसरव केना सुनू जननी अहाँ,
केतेक निर्मल सेहँतित अहँक आँचर ।
हीय सिंहकै जखनि वहै लोचन तखनि
नोर पोछलौं लपेटि हम अहँक आँचर ।
केना अएलौं खलक? मोन नै अछि कथा,
पवित्र पटसँ सटल देह भागल बेथा ।
सिनेह निश्छल अनमोल प्रथम सुनलौं मातृबोल,
मोह ममताक आन के करत परतर?

दंत दुग्धक उगल, नीर पेटसँ बहल,
देह लुत्ती भरल कंठ सरिता सूखल ।
जी करै छल विसविस तालु अतुल टिसटिस,
मुँहमे लऽ चिबएलौं अहँक आँचर ।

नेना वयसक अवसान ताकए चललौं हम ज्ञान,
कएलौं गणना अशुद्ध गुरु फोड़ि देलनि कान ।
सिलेट वाटपर पटकि माँक कोरमे सटकि,
तीतल कमलाक धारसँ अहँक आँचर ।

देखि पाँचमक फल मातृदीक्षा सफल,
भाल तिरपित मुदा! उर तृष्णा भरल ।
गेलौं केतए हे अम्बे केतए गेल आँचर,
ताकि रहलौं हम आँगनसँ पिपरक तर ।

○○

स्निग्ध-स्वाती

झिहिर-झिहिर ना हे पिया,
झिहिर-झिहिर ना!
झहरए स्निग्ध स्वातीमे बदरा,
झिहिर-झिहिर ना...!
परम सुहावन मास विरह हीय,
टपकए नेहक बुन्न
ललित पवनमे ठिटुरि रहल छी,
जीवन भऽ गेल सुन्न
टपकए विरहक अश्रुलाप ई,
झिहिर-झिहिर ना...
तृप्ति-तपित सितुआक कल्पना,
उपटल अर्णव तट मोती
अहाँ बहएलौं निरस जीवनमे,
किए अगम दुःख सोती?
मिलनक आश कानए पैजनियाँ,
झुनुर-झुनुर ना....
कांति श्रवित माणिक्य बनल,
मदमत्त भेल गजराज
मुग्ध जहानक रम्य प्रहरमे,
फफकि गेलौं हे ताज!
तोडू वेदनाक डोरि ई,
झमडि-झमडि ना..... । ।
○○

घटा बसन्ती

कूकू केर मादक स्वर सुनिते,
सिनेहातुर मन चहकि उठल
उगडुम आनन हरिअर कानन,
“घटा वसन्ती” धार बहल ।
तितली रून्झुन नीरज रससँ
केलक झंकृत सकल जहान
अपन मनोरथ सिद्धि करैले
प्रेयसी कएल त्रुतुराजक गान ।
उमडि रहल नव तरुणी यौबन
रसस्नात भेलि चंचला-गात
पुष्प सेजपर मिलन सम्मोहक
चभटि गेल अछि दुनू पात ।
जर्जर वृद्धा आ सूखल वृद्धमे
धुरि आएल पुनि कामुक जान
भागि गेलनि धर्मराज देखि कऽ
ऋतुराजक ई अनुपम शान ।
हँसी-खुशीसँ चल-अचल जीवन,
ताकि रहल होरी केर वाट
जड़-चेतनक सुरभित कांति देखि कऽ
केलक गान हृदैसँ भाट ।
रंग-विरंगक अवीर गुलाल संग
नाचि रहल उन्मादित होरी
सृष्टि मनोहर चक-चक तरुवर
मौतल चह-चह चहुँदिस जोड़ी ।
चैतावरक ओँघाएल कलरब
अग्निदेव केर जुआरि बढ़ल
घटल जहानमे कलकल जीवन
मादकता स्वर्गोकैँ जीतल । ।

साहित्यक विदूषक

किए हमरा कहै छी विदूषक ।
की हम केलौं अहाँसँ खटपट । ।
शैशव अप्पन गाममे बितएलौं
सभ ठाम देसिल गीत सुनेलौं
मूडन हो वा महुअक ।
मात्र विदेहसँ रखलौं आशा
सभ दिन पढ़लौं मैथिली भाषा
व्यारव्याता बनि भेलौं चकमक ।
श्रृंगार पहरमे कविता लिखै छी,
छी गृहस्थ मुदा बैराग सिखै छी
हमर जीवन दरससँ ओ भेलि भक् ।
कहिया धरि बाँटब जागरणक परचा
केतौं नै देखलौं अप्पन चरचा
दक्षिण नैन भेल फकफक ।
दिनचर्या लिखि कवि बनि गेला
आन्हर गुरु संग बताह चेला
उल्लू लग कोकिल ठकमक ।
केतेक दिन भरत विलाप सुनाएब
फोका डबडब परिचए प्रसूनक ।
आउ-आउ दीर्घ सूत्री भेदमे टा दिअ
हमहूँ मैथिल गर लगा लिअ
बनाउ मिथिलाकेँ सम्यक ।
○○

मुदा जीबे छी

जीवनक डोरि फृजि उड़ल व्योममे
कातर प्राण मुदा जीबे छी
सड़ल वसन पजड़ल अछि आंगुर
गलल ताग गुदरी सीबे छी....
केकरो वाड़ी बेली फुलाएल
केकरो पोखरि भैंटक लावा
हमरा घरक परथनो गिल्ल भेल
आँचक बिना सुन्न अछि तावा
कागत-मुद्राकेँ बीडी बना कऽ
कोढ़सँ नेसि-नेसि पीबे छी.....
लाल रंग शोणित सन टपकए
पीत कुटिल पिलहा बनि धधकए
कुपित होलिका छाँह देखाबथि
बड़ीपर काक-भुसुण्डी हबकए
अग्नि देवक हुथ्य डांगसँ
सुधाकेँ खोड़ि-खोड़ि जड़बै छी....
कटाह वसंत कहियो नै आबथि
राखथु अपने संग विधाता
कुसुमित रहै सबहक आँगन घर
हाँसि-हाँसि कौड़ी खेलथि पुनीता
अपन संत्रासकेँ हियामे नुका कऽ
सबहक सुखक कामना करै छी..... । ।

○○

रमा

साँझ पहर दिप-वाती दिन एलौं
रमा नाओं रखने छलि बाबी
मातृ कोरक हम पहिलुक नेना
कोन-कोन जीवन गीत गाबी
खढ़क मचान निलय बनि चमकल
कनक-रजतसँ छनछन माता
पिताक बटुआमे बैसलनि लक्ष्मी
कण-कण खह-खह कएल विधाता
लव-कृश बनि जननीक कोखिसँ
दू-दू सारस आँगनमे खिलाएल
तरुण लताकेँ स्निग्ध देखि
सर समाज घूरथि औनाएल
धेलकनि पाण्डु जर बाबूकेँ
नोकरी छोड़ि खाटपर खसलनि
खेत पथार वियाधि संग बूडल
तैयो तेसर लोकमे पैसलनि
जै ओलती छल तृप्त पपिहरा
सुग्गा चुनमुनीक चहचह शोर
क्षणहिमे देवराज टपकेलनि
शरद-निशामे आगि इन्होर
हाथसँ करची कलम छूटि गेल
छोड़ि पड़ेलनि भामिनी- भद्रा
चरण नुपूर धरा खसि टुटल
आँगन वाड़ी भरल दरिद्रा
काँच बएसमे सेंथुमे सिनूर
गदगद भेली मातु सुनयना
कहुना लाज गेल दोसर घर
सुखद नोर खसबै छथि मयना

कंतक आँगन सेहो कलुष भेल
जखने निकसल वज्र चरण रज
रैन पचीसी संग सिनेहक
लहठी फोड़ि निपत्ता पंकज
तुसारिक निस्तार केना कऽ करितौं
उज्जर नूआ खाली हाथ
सेंथुसँ सेनुर अपने पोछलौं
आन्हर सासु संग पीटै छथि माथ
आजुक डाइन- कहियो छेलौं लक्ष्मी
छाँहसँ भागथि अहिवातिन सभ
नोरक घृतसँ चिनुआर निपै छी
केकरो संग नै बाँटब कलरब
काक-दृष्टि धेने छथि बाहर
चानन ठोप केने किछु लोक
आर्य भुवनक रौ बनमानुष सभ
गर्दनि दाबि पठबए परलोक
नारीटा लेल निअम केहेन ई?
वरन् एक तँ कहाएब सती
अपन कांताकेँ छोड़ि घरमे
कहिया धरि तकबै अबला रति?
○○

उनटा-पुनटा

सबरी मायक सिनेह उनटल छन्हि,
पनटि गेल छथि- तात राम
तियागक मूरति सिया बदलि गेली
प्रति झण बदलए आठो-याम
बोतल क्षीरमे नेना उगडुम
पुष्ट वक्षक लेल अंबा अंध
टॉप पहिरलनि यशोदा मैया
कान्हा हेरथि आँचर गंध
काका दलानपर रसमंजरि लागल
पढ़ि-लिख पूत भेलनि अधिकारी
घूसक टाकासँ दलानकेँ छाड़ब
लालबत्ती बरू भऽ जाउ कारी
अन्न-पानि बिनु बाबा मुइला
भीठ बिका हेतनि वृषोत्सर्ग
सभ बौराएल यशोगान लेल
गजिया शीत तप्पत अपवर्ग
नांगरक चार चुआठ बनल
तिरपित झाकेँ भेटलनि शमियाना
गोदानक संग जौँ साँढ़ नै दागब
लोकवेद सभ देत ताना
पहिल छायामे हमरो भेटल
राहरि दालि संग वासमती
बाबाकेँ जौँ अहिना खुआबितियनि
अखनि नै जेता छल तट वागमती
छोट परिवारक लेल मामी माहुर
कात भेली नानी बनि अपरतीप
आर्य भूमिमे मिझा गेल अछि
संयुक्त परिवारक खहखह दीप

सुकेश्वर रामक गाराक कंठी
हाथ धएने धर्मक पतवार
अपैत कुलमे जन्म की भेलनि?
माथ लिखेलनि जाति चमार
सुरावोरि मुर्गी टांग चिबाकऽ
विविध कुलक्षणक संग राति बिताबधि
पंडित वंशक कटुआएल पौरुष
मास्टर साहेब ब्राह्मण कहाबधि ।
○○

कविक कामना

पूत बढबैछ वंशक मान
मुदा पिपरोलिया बाबासँ
मंगलनि पोतीक रूपमे सुकन्या
अचा अपर्णा वा भव्या
कवि बनि गेला पितामह
सफल भेल कबुला-पाती
भगवत कृपा देख-
खुशीसँ फुललनि जीर्ण छाती
जेठका जीवन झखरैत पाषाण
वियाहक भेल सोलहम बरख
अखनि धरि- निःसंतान
दोसर निष्कपट बुडिबक
परंच पितृसेवक अविराम
करची सन लकलक काया
रंग धन इव श्याम
घनश्याम कनियाँ कोरमे
सद्यः अएली वैदेही बनि कन्या
कविक उपवन भेल धन्या
मुदा! साक्षीक पिताक स्थान
जेठकेकेँ भेटत
श्यामकेँ जौँ छन्हि बाप कहेबाक
सख आश वा दीर्घ पियास
दोसर बेटीक लेल
राखथु एकादशी उपास
यएह भेल
कवि गेला स्वर्ग
भेटलनि मुक्ति भेलनि अपवर्ग
साक्षीक माताक कोरमे

फेर बेटी बनि अएली भारती
विचित्र अन्हेर
प्रकृतिक फेर
अँगने अँगने अड़ए लागल
गप्प हरबिड़रो
बरसए लागल कनफुसकीक झाँट
अपने हाथसँ कविजी
रोपलनि बबूरक काँट
बड़की काकी दिअ लगलनि तान
नै छेलनि हुनका संसारक ज्ञान
कबुलामे किएक मंगलनि बेटी
हम जाँ हुनका स्थानपर रहितियनि
तँ जनमिते दाबि देतौं
ऐ राक्षसनीक घँट
बेटीक लेल प्रार्थना!
आश्चर्य केहन कविक कामना
एकबेर आर अन्हेर
भादवक अन्हरियाक फेर
स्तब्ध छथि सभ कियो
देख कवि कुलक दशा
आँगनक बहुआसिन सभ
टोलक अनन्या
कपार पिटए लगलखिन
छोटको पुतोहुक कोरमे
जनमलि... कन्या
हा भगवान महात्माक यएह मान
मंगने देलियनि तीन
पुष्प माल लागल फोटोमे
कवि छथि मुग्ध तल्लीन
जेना कहि रहल होथि
के रखलक जहानक मान?

के बढेलक कुलक सम्मान?
के बचेलक वंश
सीता अहिल्या सावित्री
वा रावण कौरव कंस?
○○

मुरुदा जगाउ

इजोतमे तँ सभ चलै छै
अन्हारमे चलि कऽ देखाउ
स्वान सुनि पदचाप जागए
चचरी चढ़ल मुरुदा जगाउ
नृपक मीठ दर्द सुनि बौराएल
पटरानी-मंत्री-सेनापति-चाकर
ओइ अभागल दिस के तकलकै
जे सर्व विहिन जेकर देह जर्जर
भरल पेट हाफी करैत
पहुँचल महाजन दुआरि जखने
स्वार्थक दुग्धसँ बनल पयस
भरि थारी आगाँ रखलौं तखने
आँत चटचट कंठ सूखल
पानि नै जे घोंटि पाबए
सुखल अछोप मध्यम जनकें
झाँटि 'चंडाल' कहि भगाबए
देवध्वनिमे निपुण वाचक
पंचतत्व देहे भरल छै
पिरही नै कियो दैत ओकरा
छुद्र कुलमे ओ जनमल छै
देव धर्मकें पीस रहलै
झपटल सोन बोरि कऽ बटोरल
केहेन विकराल मृगतृष्णा ई
सभ घोंटि उन्मत्त जहर घोरल
अंतिम आग्रह थिक सुनू बौआ
ऐ फेरमे कखनौं पड़ब नै
अपना संग सभकें जगाएब
कुमार्ग कहियो धरब नै । ।

○○

अस्तित्वक प्रश्न?

ककरासँ कहबै के पतिएतै अपने तरंगमे भीजल दुनियाँ
बड़ अथाह स्वार्थक अर्णव ई शुभ बनि गेलै लोलुप बनियाँ
शोणित बोरि-बोरि टाट बनेलौं
खर खोड़ि टिटही लऽ गेलै
फाटल आँचरसँ केना कऽ झँपबै
खाली चिनुआर बेपर्द भऽ गेलै
व्याल दृष्टिसँ राकस गुड़कए चिहुकि-बिचुकि कऽ कानए रनियाँ
कर्मक नाहमे भेलै भोकन्नर
बामे हाथे पानि उपछलौं
भदवरिएमे पतवारि हेराएल
दहिना हाथक लग्गा बनेलौं
सभटा आडुर पानि खा गेलै, केना बजतै दर्दक हरमुनियाँ
कछेरमे विषनारि उगल छै
थलथल पाँक पएर धँसि गेलै
अन्हार मोनिमे कछमछ कऽ रहलौं
बिनु जाले टेंगड़ा फँसि गेलै
केना कऽ हमरा बाहर करतै नोर चाटि हहरए सोनमनियाँ...
किछु छिद्दीक तरमे दबि कऽ
पंद्रह आना अकसक कऽ रहलै
भारी भेल कुकर्मक सोती
ओकरे धारमे गंगा बहलै
घनन दरिद्रा तांडव करतै,
अस्तित्वक- प्रश्न बनल पैजनियाँ..... ।

○○

क्षणप्रभा

सभ दिस सर्द
कियो नै बेपर्द
देह सिहकल रेह तितुरल
पोखरि-इनार ठमकल
पूस रमकल
श्याम असर्ध शीतक बीच
टक टक कएने आश
कखनि भरत मोनक पियास
कबदबैत चम्पा मुस्कैत पलाश
सूर्यमुखीक दशा देखि
ओकरासँ किए करैत छी सिनेह
जे कुन्तीकेँ ठकि लेलक
ओकर कौमार्य नष्ट कऽ देलक
आइ आगिक ढेपपर
के करत बिसवास?
झाँपू मर्यादा बचाउ गेह
भावक आगाँ प्राप्तिक कोन मोजर
एतबेमे मेघ उडि गेल
शीत लुप्त भेल
क्षणप्रभा बनि रविक अर्चिस
सूर्यमुखीक,
कोमल कोपरमे समा गेल
ज्योतिपुंजकेँ आदित्यक चरण मानि-
सूर्यमुखी अपन सेंथुमे
भस्मीभूत कऽ लेली
अखण्ड सौभाग्यवतीक आशीषक संग
किरण ससरल
कली फूल बनि पसरल
हम तँ उभय लिंगी छी

नै रहितौँ तैयो करितियनि
सुरुजसँ प्रेम..... ।

सभ किए दैत छी हुनकापर दोख
ने डूमैत छथि ने उगैत छथि
सभ पिण्ड घूमि-
हुनकापर डूमि जएबाक
कलंक लगबैत अछि-
जखनि अपनामे दृढ़ता नै
तँ दोसरपर दोष केहेन?
बिनु बजौने सभ लग अबैत छथि
आठो याम जरैत छथि
कुन्ती सभ जनैत किए
कएली वरण-
ज्योजिपुंजकेँ बान्हब
ककरासँ भेल संभव?
आदित्य सिनेहक तापस
लगले तप्पत, लगले विदूष
केना भेला छलिया?
सिनेहक अर्थ सुधि प्रभंजन
नै स्पर्श
एकर नै अवसान
नै उत्कर्ष..... ।

क्षणप्रभा जेकरापर खसल
ओ जरल ओ मरल
मुदा! सिनेहक क्षणप्रभा
वासना मात्र नै-
शाश्वत स्पंदन..... ।

जेकरामे केलक प्रवेश
ओकरा रोम-रोम शेष-अशेष
एकर भंगिमा वएह कहत
जेकरामे संवेदना रहत..... ।
○○

सगर राति दीप जरए

राति माने कारी पहर
गत्र-गत्र शांत
जीव अजीव आक्रांत
रजनीक लीलासँ
क्षणिक बँचबाक लेल
लोक जरबैछ दीप
सभ्यताक विकासक संग-संग
मनुख चेतनशील होइत गेल
पहिने इजोतक लेल..... ।

खर-पुआर जारनि
लत्ता नूआ फट्टा
सूत छोड़ि रूइयाक बाती
ढिबड़ीक बदला लेम्प
बहकैत रोशनीमे गबैत पराती
बुइधिक विकास भेल..... ।

विद्युत तरंगमे
गैसक उमंगमे
विज्ञानक जय भऽ गेल..... ।

सभ ठाम इजोत
मुदा! वैदेहीक घर अन्हार
मात्र लिखते रहब
केकरोसँ नै कहब
के बूझत कथाक विकास
केकरो नै छल आभास
दधीचि बनि सांगह नेने

आबि गेलनि
मैथिली कथा जगतमे प्रभास
सुरुज दिन भरि अपन
करेजकेँ जड़ा कऽ
नै मेटा सकल
ऐ वसुन्धरापरसँ
विगलित मानुषक प्रवृत्ति
प्रभास दीप बारि
अपन करूआरि सम्हारि
कथा सागरक जमल तरंगमे
दिअ लगलनि हिलकोर..... ।

समाज जागत- ई छल बिसवास
मुदा नै आदि भेटलनि
नै भेटलनि छोर...
किनछेरिपर अपसियाँत
कथाकार लऽ लेलनि निर्वाण
जागरणक आशामे
कहियो तँ सुखतनि
वैदेहीक झहरैत नोर..... ।

चलि गेला अभिलाषा नेने
उत्तराधिकारी सभ खेलाइत छथि
अट्टा बज्जर करिया-झुम्मरि
उद्यत छथि अधिकार हरबाक लेल
पाग पहिरबाक लेल
सगर राति दीप जरए..... ।

रमण रमानन्द- आनन्द विभूति
गेरुआ गर लगौने छथि
मलंगिया महेन्द्र

मसनद पजिऔने छथि
समालोचक- उद्धोषक सूतए
मात्र वाचक मंच चिकरए..... ।

कहैत छथि बूढ़ छी
तखनि गोष्ठीमे आबि
नाटक करबाक कोन प्रयोजन?
दीप बारि दुआरि नै जराउ
जे जगदीश जागल रहत
ओकर गामक जिनगी के सुनत?
ओ अछि समाजक कात
कहियो होमए देब
ओकर साहित्य साधनाक प्रभात
किएक तँ ओ छी वेमात्र
जइ माटिक अन्हारकँ
सुरुज नै हटा सकल
ओ केना हटत माटिक दीपक बल?

जौं दृष्टिकोणमे रहत छल
तँ विवेक केना निर्मल?
ओइ कठकोंकारि सबहक बीच
मैथिली छथि दुबकल
सगर राति दीप जरए
अन्हार घर संस्कार सड़ए
कथासँ केना पारस निकसए?
○○

कर्मयोगी

ने भगता योगी आ ने डलबाह हरखक तरंग नै,
नै विपत्तिक आह पहिलुक दर्शन कहिया भेल नै
अछि मोन जहियासँ देखैत छियनि वएह गंभीर मुस्की ..
केकरो उपहास नै केकरो परिहास नै, नै
ठोरपर वसन्तक गान नै
हिअमे ग्रीष्मक मसान
नेना सभक प्रिय अध्यापक कर्मयोगी-
अपकल केना भेलनि पितामह चूकि?
रीतिक कालपुरुखक नाओं- कामदेव!!!
कोनो नै काम भलमानुष निष्काम
तेसर पहरक विज्ञानीक बाद
जगतधात्रीक नित्यक दर्शन
तामझामक गाममे रहितो
त्रिपुंडसँ मुक्त छुच्छेक हाथे
तर्पण आब की मंगैत छथि बाबा?
झबरल आँगनमे शक्ति सहचरी
जाइ रवि-शशिक किरणकँ आत्मसात
करबाक लेल लोक करैत अनर्गल प्रलाप
व्यर्थ कृटिचालि रचैत
चोरि कऽ आडंवर करैत
तनयक रूपमे ओ दुनू
बाबाक आँगनक श्रवण कुमार
“अचला” चंचला बनि देलनि
कन्याक उपहार
दुःखक सोतीमे जखनि अकुलाइत
छै मनुख तखनि आस्तिककता जगैत
भूख मुदा! तिरपित बाबा नै करैत छथि
भगवानसँ छल, सुधामे जल मन निरमल....
समाजमे छन्हि शीतलताक आह

सदेह कवि नै तखनि वैदेहीक चाह?
अपने नेपथ्यमे रहि
नाटकक कएलनि निर्देशन
देसिल वयनाक प्रति कर्मक गति अर्पण
एकाध प्रहसन लिखि अकथ्य कविता गढ़ि
केतेक आजाद भऽ गेल चिन्हार मुदा!
इजोतक स्रोत तक पिरही अन्हार
कोनो नै छन्हि छोह सबहक
उत्कर्ष हुअए यएह आश,
यएह मोह की ब्राह्मण की अछोप
की धानुक की गोप सबहक बाबा.....
जइ गाछक छिऐ छाहरि वएह उत्तुंग
वएह श्रृंग सिक्कठि हुअए वा नरकट
स्वीकार करैए पड़तनि समाजकेँ
बाबा सन चेतनशील मनुखकेँ
जे संस्कार लूटाबए सबहक कल्याणक लेल
अन्तर्मनसँ सोहर गाबए..... ।
○○

एकटा छेली आरती

एकटा छेली आरती
भदेसक भारती
आगाँ 'राय' की लागल
ओ सभ बूझि गेलथि
किछु आर
विद्रूप वा होशियार
छलनि खड़ाम देबाक आश
भदेसक कांता
महा भदेसमे छथि-
हुनका पड़ाइन लागि गेल छन्हि
आन किए जाएत
केना पड़ाएत
कित्रौं नै होमए देलक
मुक्तक काव्यक आश पूर
कियो नै गेल भागलपुर
आरती रूसि गेली
क्षणिक नै
अन्तर-आत्मासँ हूसि गेली
मुँहजोड़ भाषामे
जे राखत आत्मासँ
विदेह-तनुजासँ सिनेह
आत्मासँ गेह
सबहक हएत वएह दशा
भोगए पड़तनि
उत्तराधिकारीकेँ क्लेश
सभ दिनक लेल बिला देतनि
जहानसँ भगा देतनि
मात्र हमहीं टा नाचब
हमहीं देखब

के सूतल के जागल
के नै बूझए
जे करत प्रयास
ओ भऽ जाएत अभागल
ऐ माटिसँ उपटल वैदेहीकेँ
आन भूमिक लोक
माटिमे मिला देलनि
मुदा अपन आरतीकेँ
अपने सांगह खसा देलकनि..... ।

○○

(प्रसिद्ध लेखिका स्व. डॉ. आरती कुमारीकेँ समर्पित...)

सुखार

काल रहसल त्रास बहकल
मधुमासे संत्रास महकल
अषाढ कृपित इन्द्र रूसल
जल बुन्न बिनु बिआ विहुसल
आडि चहकल खेत दडकल
प्रशान्तक प्रकोपे मनसून सरकल
शोषित कलकल जुआनी गरकल
रोहिणी-आरदरा सुखले रमकल
“ग्लोबल-वार्मिंग” फनकल
क्षुब्ध प्रकृति सनकल
विज्ञानक चमत्कारमे उच्छावास छनकल
गाछ काटि फोर लेन बनेलौं
पहिने किए नै नवगछुली लगेलौं
अपने गतिक स्टेयरिंग पकड़लौं
मजूर किसानकेँ घर बैसेलौं
कृषि प्रधान देशमे नोरक स्नात
आँखिक शोणितसँ केना भीजत पात?
ऐ बेर सुखार साउनो बीतल
दीनक आत्मा तीतल
भदैया बूडल रब्बीक कोन आश
सुक्खल मुरदैया मरुझल कास
अगिला साल औत बाढ़ि
देलौं खेतिहरकेँ ताड़ि?
वाह रौ विज्ञान वाह रौ धनमान
बिनु हथियारे लेलें गरीब-गुरवाक जान
जेकर भऽ सकए संलयन आ विघटन
आयुर्वेदमे तइ रसायनक चर्चा
विज्ञानक बाढ़िमे सगरो पोलिथिन
कागत छोड़ि बाँटि रहलौं प्लास्टिकक पर्चा

आजुक रसायनसँ माटिक कोखि उजड़ल
दुट्टु डाँट किछु नै मजड़ल
प्लास्टिक छोड़ि लिअ जूटक बोरा
पोलिथिन नै ठोंगा-झोरा
छोड़ रौ धनचक्कर
एडभान्स बनबाक चक्कर
पकड़ए अपन बाप-पुरुखाक देल हथियार
धरे मौलिक संस्कार
केमिकलसँ नहा तँ लेबँ
मुदा! की चिबेबँ....?
○○

गजल १

कालरात्रिमे महमह दिनमान केना आएत
मोनमे पाप झबरल भगवान केना आएत

नै जड़े प्राण वायु मरल सरल देह संग
अधम नीचाँ खसत धर्म गगनमे बिलाएत

माँझ आँगन काँटक बोन नै रोपू प्रियतम
काग कोइली सन कोमल संतान केना पाएत

विरह मासमे ने सोहर सोहनगर लगै छै
कंठमे पित्त चभटल मधुगीत केना गाएत

अपने करू रास लीला नेना दूध बिनु कानए
कर्मभीरू पुरुखकैँ जयकार कहेन हएत

○○

गजल २

कहू की बात हम मानिनि कलुष भऽ गेल अछि अर्पण
केना सहबै अखल कंटक दबै छै टीसतर तर्पण

सोहाबै नै खुशी सरगम समाजक हास परिलक्षित
धुनै छी देल कालक गति गदराबै नै विकल जीवन

पतित नियति आकूल भेलै जड़ल अर्णव तरंगे छै
सूतल ईश सभ पंथक एलै समभावमे विचलन

बाहरसँ जे जत्ते गुमसुम हिआसँ ओ ओते बिखधर
चानन बहलै उषाकाले वाह रौ जहानक संकर्षण

भेटल जेकरा जेतए अवसरि हाथ धोलक हलालीसँ
नीतिक मंचपर चढ़िते करै माटि नेह प्रति गर्जन
○○

हाइकू

सूतल जग/ दिनकर लालिमा/ जगा देलक
रविक लाली/ /ऐ सूतल जहाँकै/ जगा देलक
बर्खाक बाद/ खहखह पाइन/ वसुधा तृप्त
○○



शिव कुमार झा, पिताक नाम : स्व. काली कान्त झा
“बूच“, माताक नाम : स्व. चन्द्रकला देवी, जन्म तिथि : 11-12-
1973, शिक्षा : स्नातक (प्रतिष्ठा), जन्म स्थान : मातृक : मालीपुर
मोड़तर, जि.-बेगूसराय, मूलग्राम : ग्राम + पत्रालय-करियन, जिला
समस्तीपुर। संप्रति : प्रबंधक, संग्रहण, जे. एम. ए. स्टोर्स लि., मेन रोड,

बिस्टुपुर, जमशेदपुर। अन्य गतिविधि : वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि
विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक, गतिविधि एवं मैथिलीक प्रचार-
प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी
(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न।